

स्वतन्त्रता से पूर्व एवं पश्चात भारत में विद्यालयी विषयों में परिवर्तन →

स्वतन्त्रता से पूर्व एवं पश्चात भारत में विद्यालयी विषयों में परिवर्तन की प्रक्रिया व्यापक रूप में सम्पन्न हुई है। स्वतन्त्रता से पूर्व विद्यालयी विषयों में उस समय की स्थिति के अनुरूप अनुशासन स्थापित किया गया। स्वतन्त्रता से पूर्व के विद्यालयी विषयों पर विचार किया जाय तो ब्रिटिश काल में ही विद्यालयों की व्यवस्था का उदय हुआ था। वैदिक काल, बौद्ध काल तथा मध्य काल में विद्यालय की व्यवस्था शुरू नहीं मठ एवं मदरसों के रूप में होती थी। अतः ब्रिटिश काल में विद्यालयी विषयों एवं स्वतन्त्रता के पश्चात विद्यालयों में संदर्भ में विचार करना उपयुक्त है। अतः विद्यालयी विषयों में परिवर्तन की श्रृंखला एवं विद्यालयी विषयों के स्वरूप को दो भागों में बांटा जा सकता है।

1.- स्वतन्त्रता से पूर्व भारत में विषयों में परिवर्तन →

भारत में विद्यालयी शिक्षा का प्रारम्भ अंग्रेजी शासन व्यवस्था से माना जाता है। इस शासन व्यवस्था

Page No. _____
Date: _____

विद्यालयी विषयों के स्वरूप एवं उनमें होने वाले परिवर्तनों को निम्नलिखित शीर्षक के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है -

1- अंग्रेजी मिशनरियों के प्राथमिक प्रयास में विद्यालयी विषय →

इस समय के विद्यालयों में धर्म आधारित विषय सम्मिलित किये गये। विद्यालयी शिक्षा के नाम पर बाइबिल का प्रचार-प्रसार सम्मिलित किया गया इसमें मिशनरीज द्वारा विद्यालयों की स्थापना करके तथा ~~बिना~~ प्रिंटिंग प्रेस लगाकर भारतीयों एवं छात्रों को इसाई धर्म के बारे में ज्ञान प्रदान करने का प्रयास किया गया। इस समय विद्यालय में कोई पृथक् विषय या विषयों का समूह नहीं था। मात्र धार्मिक प्रचार-प्रसार ही विषय के रूप में था। इसके लिए एंग्लिकन चैरिटेबल स्कूल 1729 में श्री स्कूल सोसाइटी द्वारा श्री स्कूलों की स्थापना सन् 1789 में एवं 1817 में बैटिस्ट मिशनरियों द्वारा 125 विद्यालयों की स्थापना करके विविध प्रकार से धार्मिक शिक्षा का विस्तार किया गया।

2. चार्ल्स ग्राण्ट के प्रयासों में विद्यालयी विषय →

चार्ल्स ग्राण्ट के समय में विद्यालयी शिक्षा में उपाधुनिकता का समावेश हुआ। चार्ल्स ग्राण्ट ने अंग्रेजी संस्कृति एवं सभ्यता सम्बन्धी विषयों को विद्यालयी व्यवस्था में स्थान देने की बात कही थी।

ग्राण्ट का मानना था कि हमारे समाज में प्रचलित विद्यालयी विषय ही भारतीयों की अज्ञानता को दूर कर सकते हैं। इसलिये उसने अंग्रेजी साहित्य, विज्ञान एवं संस्कृति सम्बन्धी विषयों को स्वीकृत किया।

३. - सन् 1793 एवं 1813 के आज़ा पत्र के अनुसार विद्यालयी विषय →

सन् 1793 के आज़ा पत्र में यह स्वीकार किया कि अंग्रेजी सभ्यता एवं संस्कृति सम्बन्धी विषय भारतीयों पर नहीं लादने चाहिये। इसके लिये उनके अपनी संस्कृति से सम्बन्धित ज्ञान प्रदान करना चाहिये। इसी क्रम में 1813 के आज़ा पत्र में प्राचीन भारतीय भाषाओं को विद्यालयी विषयों के रूप में स्थान प्राप्त हुआ जैसे - संस्कृत, अरबी, फारसी आदि।

(4) लार्ड मैकाले के विवरण पत्र →

लार्ड मैकाले ने प्राच्य-पाश्चात्य विवाद का समाधान करते हुए विद्यालयी विषयों एवं अंग्रेजी साहित्य को समान रूप से स्थान प्रदान करने की बात कही। लार्ड मैकाले का मानना था कि भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिकता का समावेश करने भारतीय विषयों को उपयोगी बनाया जा सकता है। इससे एक दूसरे के साहित्य का आपस में अनुवाद किया जा सकता है। विद्यालयी विषयों के रूप में दोनों का समन्वयन ही उपयोगी सिद्ध होगा।

(5) बुड का घोषणा पत्र में विद्यालयी विषय

बुड के घोषणा पत्र में विद्यालयी शिक्षा को अंग्रेजी दर्शन से सुसज्जित करने की पूर्ण योजना थी। इस यूरोपीय विज्ञान, दर्शन, साहित्य एवं परिमार्जित कलाओं से युक्त बनाना था। इसके साथ-साथ भारतीय साहित्य को भी साथ में रखना था जिससे भारतीयों के विरोध के स्वर मुखरित न हों। इस समय के विद्यालयी विषय पूर्णतः यूरोपियन व्यवस्था से प्रभावित थे।

(6) लार्ड कर्जन की शिक्षा नीति एवं
विद्यालयी विषय →

लार्ड कर्जन की शिक्षा नीति के अनुसार विद्यालयी विषयों में गणित एवं विज्ञान के अतिरिक्त कुछ शिक्षा को भी सम्मिलित किया गया। विद्यालयों में शिक्षण पद्धति के लिए किंग्स गार्डन पद्धति को अपनाने का प्रयास किया गया। इसके साथ शिक्षा व्यवस्था में उन विषयों को समायोजित करने का प्रयास किया गया जो तत्कालीन व्यवस्था से सम्बन्धित हैं। विद्यालयी विषयों में शिक्षा का माध्यम क्षेत्रीय भारतीय भाषाओं को स्वीकार किया गया। इसके साथ-साथ नैतिक शिक्षा को भी विषयों में स्थान दिया गया। भारतीय संस्कृति एवं सम्पत्ता से सम्बन्धित तथ्यों को भी विद्यालयी व्यवस्था में स्थान दिया गया।

(7) विक्रोरिया काल में विद्यालयी विषय
विद्यालयी विषयों में वर्ग्यीय, संस्कृति एवं सम्पत्ता का प्रभाव बना रहा।

॥ Page No. ॥ Date: ॥ १. हठ्टर आयोग एवं विद्यालयी विषय

हठ्टर आयोग का गठन किया गया जिसमें शिक्षा सुधार लक्ष्य था। हठ्टर आयोग द्वारा प्राथमिक स्तर पर विषयों के रूप में भौतिक विज्ञान के रूप में तथा क्षेत्रमिति चिकित्सा, वही खाता एवं कृषि आदि को प्राथमिकता प्रदान की गयी। माध्यमिक स्तर पर दो प्रकार के पाठ्यक्रम का र्थचालन किया गया। प्रथम पाठ्यक्रम उन छात्रों के लिए था जो कि उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते थे। ऐसे पाठ्यक्रम एवं विद्यालयी शिक्षा विषय को ही कोर्स का नाम दिया गया तथा जो छात्र किसी व्यवसाय में चयन चाहते थे उनको कोर्स के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करनी होती थी। इस प्रकार हठ्टर आयोग द्वारा प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों के लिए पाठ्यक्रम का निर्धारण किया गया। इसके साथ-साथ स्त्री शिक्षा एवं धार्मिक शिक्षा के विषयों से सम्बन्धित विचार भी आयोग द्वारा प्रस्तुत किया गया।